इकाई 10: राजनीतिक भूगोल में सांस्कृतिक तत्व (Cultural Elements in Political Geography)

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 जनसंख्या
10.2.1 जनसंख्या वितरण एवं घनत्व
10.2.2 जनसंख्या वृद्धि
10.2.3 शहरी जनसंख्या
10.2.4 जनाधिक्य की समस्या
10.3 भाषा
10.4 धर्म
10.5 सारांश
10.6 शब्दावली 10.7 सन्दर्भ ग्रन्थ
10.8 बोध प्रश्नों के उतर
10.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

10.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त आप समझ सकेंगे :–

1 सांस्कृतिक तत्व किसी प्रदेश के राजनीतिक परिदृश्य को किस प्रकार नियंत्रित एवं निर्धारित करते है ।

2 राज्य के राजनीतिक स्वरूप के निर्धारण में जनसंख्या की क्या भूमिका, होती है । जनसंख्या से सम्बन्धित विभिन्न तत्वों का राजनीतिक दृष्टिकोण से क्या महत्व है।

3 भाषा का राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्या महत्व है? किस प्रकार समान भाषा क्षेत्रीय एकता का सूत्र है? दूसरी ओर अनेक भाषा का होना किस प्रकार राष्ट्रीय एकता में बाधक है ।

4 धर्म का विश्व राजनीति एवं राज्यों की राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

10.1 प्रस्तावना (IntroductionIntroduction)

प्राकृतिक तत्वों के समान सांस्कृतिक तत्व भी किसी प्रदेश के राजनीतिक स्वरूप को प्रभावित करते हैं । सांस्कृतिक तत्वों में मुख्यत: जनसंख्या, भाषा, धर्म आदि तत्वों को सम्मिलित किया जाता है । प्रस्तुत इकाई में इन तत्वों का समुचित विवेचन किया गया है । इस इकाई के खण्ड 10.2 में जनसंख्या के विभिन्न पक्षों का

विस्तार से वर्णन किया गया है । 10.2.1 में विश्व की जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व का, 10.2.2 में विश्व जनसंख्या वृद्धि का, 10.2.3 में शहरी जनसंख्या का एवं 10.2.4 में विश्व में जनाधिक्य की समस्या का विवेचन किया गया है । खण्ड 10.3 में भाषा की चर्चा की गई है जिसमें भाषा ' का राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का वर्णन किया गया है । इसमें अमेरिका, यूरोप, एशिया, अफ्रीका एवं आस्ट्रेलिया की भाषाओं के बारे में भी बतलाया गया है । खण्ड 10.4 में राजनीतिक भूगोल में धर्म के महत्व की विवेचना की गई है । इस खण्ड में विश्व के प्रमुख धर्मो, धर्मावलम्बियों आदि का वर्णन किया गया है । खण्ड 10.5 में इस इकाई. का सारांश दिया गया है । इकाई के अन्त में शब्दावली, सन्दर्भ ग्रन्थ, बोध प्रश्नों के उत्तर एवं अभ्यासार्थ प्रश्न दिए गए हैं।

10.2 जनसंख्या (Population)

जनसंख्या राज्य के मूल तत्वों में प्रमुख है । राज्य का उद्देश्य जनसंख्या का हित एवं सुरक्षा करना होता है तो दूसरी ओर राज्य का अस्तित्व उसकी जनसंख्या पर निर्भर करता है । किसी राज्य की जनसंख्या वहां की प्रमुख राष्ट्रीय शक्ति होती है । जनसंख्या ही राज्य की उत्पादन क्षमता एवं वहां की राजनीतिक घटनाओं को नियंत्रित करती है । राज्य का विकास जनसंख्या द्वारा प्रभावित होता है । इसी प्रकार राज्य की विदेश नीति पर उसकी जनसंख्या का प्रभाव पड़ता है । संतुलित जनसंख्या जहां राज्य की प्रगति में सहायक होती है वहीं दूसरी ओर अधिक जनसंख्या राष्ट्रीय विकास में बाधक 'होती है एवं उसे दूसरे देशों पर निर्भर बना देती है । अत: जनसंख्या एक प्रमुख सांस्कृतिक तत्व है । यहां हम जनसंख्या के विविध रूपों जैसे वितरण, घनत्व, वृद्धि, संभावित जनसंख्या, शहरी जनसंख्या, जनाधिक्य की समस्या आदि का विवेचन राजनीतिक दृष्टिकोण से करेंगे ।

10.2.1 **जनसंख्या वितरण एवं घनत्व** (Distribution and Density of Population)

जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का किसी राज्य की शक्ति पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है । चीन के शक्तिशाली राष्ट्र बनने के पीछे वहाँ की अधिक जनसंख्या ही है । इसी प्रकार भारत का विश्व राजनीति में प्रमुख स्थान बनाने में यहाँ की जनसंख्या का प्रमुख योगदान है ।

जनसंख्या वितरण (Population Distribution)

विश्व में जनसंख्या का वितरण अत्यधिक असमान है । यह असमानता विश्व के जलवायु प्रदेशों में, महाद्वीपों में एवं राज्यों में देखी जा सकती है । जनसंख्या का वितरण जलवायु के तत्वों द्वारा अत्यधिक नियन्त्रित एवं निर्धारित होता है । इसमें सर्वाधिक प्रभाव तापमान एवं वर्षा का होता है । साइबेरिया एवं टुण्ड्रा प्रदेश अधिक शीत के कारण, भूमध्यरेखीय. क्षेत्र, अधिक नमी एवं उच्च तापमान के कारण तथा विशाल एशिया, अफ्रीका एवं आस्ट्रेलिया के मरूस्थलीय भाग अधिक ताप एवं वर्षा के कारण

बहुत कम जनसंख्या वाले प्रदेश है । दूसरी ओर मानसूनी जलवायु एवं शीतोष्ण जलवायु वाले प्रदेशों में विश्व की अधिकांश जनसंख्या निवास करती है ।

महाद्वीपों के अनुसार विश्व की जनसंख्या का अध्ययन किया जाए तो सबसे अधिक बसे महाद्वीप क्रमश: एशिया एवं यूरोप हैं तथा कम जनसंख्या वाले दक्षिणी महाद्वीप हैं । यद्यपि महाद्वीपों के क्षेत्रिय विकास में भिन्नता है किन्तु प्राकृतिक एवं मानवीय कारण भी इस भिन्नता के लिए उत्तरदायी है । विश्व के विभिन्न महाद्वीपों में जनसंख्या का वितरण निम्न तालिका से स्पष्ट है –

तालिका : विभिन्न महाद्वीपों में जनसंख्या का वितरण (2001)

क्र.स.	**महाद्वीप**	**क्षेत्रफल (मिलियन हैक्ट.में**	**जनसंख्या (मिलियन में)**	**विश्व का** %
1.	एशिया	27	3720	60.6
2.	यूरोप	5	727	11.8
3.	अफ्रीका	30	818	13.3
4.	उतरी अमेरिका	24	525	8.5
5.	दक्षिणी अमेरिका	18	350	5.7
6.	ओशोनिया	9	31	0.5
7.	विश्व	125	6137	100.0

स्त्रोत : World Population Data Sheet,UNO, 2001

महाद्वीपों में जनसंख्या का वितरण एवं कुल जनसंख्या में अत्यधिक अंतर पाया जाता है । राज्यों में जनसंख्या का अंतर राज्य की राजनीतिक स्थिति एवं आर्थिक विकास', को प्रभावित करते हैं । विश्व में एक ओर चीन तथा भारत जैसे देश है जिनकी जनसंख्या 2001 में क्रमश: 127.3 एवं 103.3 करोड़ अंकित की गई है । दूसरी ओर साधन सम्पन्न संयुक्त राज्य अमेरिका है जिसकी जनसंख्या 28.4 करोड़ (2001) है । अत: अन्य अधिक जनसंख्या वाले देशी में जापान तथा इंडोनेशिया है, जिनकी जनसंख्या क्रमश: 12.4 करोड़ एवं 20.6 करोड़ अंकित की गई है । राज्य की यह जनसंख्या भिन्नता यहाँ के राजनीतिक संगठन को प्रभावित करती है । विश्व में राजनीतिक शक्ति के लिए जनसंख्या की मात्रा के साथ उसके गुण अर्थात् कार्य क्षमता, जीवन स्तर, तकनीकी ज्ञान भी महत्व रखते हैं ।

एशिया में विश्व की 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या निवास करती है । एशिया में जनसंख्या के दो विशाल समूह हैं– 1. पूर्वी एशिया तथा 2. दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्वी एशिया । सघन आबादी नदियों की घाटियों तथा डेल्टाओं में संकेन्द्रित हैं । यूरोप में विश्व की 12 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है । अधिकांश जनसंख्या खनिज सम्पन्न क्षेत्रों तथा नदी घाटियों में करती हैं । 40० उतरी अक्षांश के सहारे यूरोप की सघन आबादी पायी जाती हैं । जिसे यू.प की 'जनसंख्या की धूरी' भी कहते हैं।

उतरी अमेरिका की जनसंख्या 454 मिलियन 2001 है जबकि दक्षिण अमेरिका की जनसंख्या 350 मिलियन है

अफ्रीका में 816 मिलियन जनसंख्या निवास करती है जो विश्व की कुल आबादी का 13.2 प्रतिशत हैं । यहाँ सघन जनसंख्या मिश्र की नील नदी की घाटी में पायी जाती हैं । ओशिनिया की जनसंख्या 31 मिलियन है । आस्ट्रेलिया की जनसंख्या 19.4 मिलियन तथा न्यूज़ीलैण्ड की 31 मिलियन है । आस्ट्रेलिया में आबादी का संकेन्द्रण दक्षिण–पूर्वी भाग के तटीय क्षेत्रों में मिलता है ।

जनसंख्या घनत्व (Population Density)

विश्व में जनसंख्या की घनत्व का वर्तमान प्रतिरूप मुख्यतः विश्व के विभिन्न भागों में मानव बसाव के इतिहास, तथा कुछ सीमा तक विभिन्न क्षेत्रों की धारण क्षमता (Carrying Capacity) को परिलक्षित करता है । तालिका से यह सूचित होता है कि विश्व का औसत जनघनत्व 2001 में 45.5 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था । जनघनत्व की विषमताऐं इसी तथ्य से विदित होती है कि आस्ट्रेलिया का औसत घनत्व 2 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, जबकि माकाओ (चीन) में 21900 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर निवास करते हैं ।

एशिया, जहाँ विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ विकसित हुई है, विश्व का सबसे घना आबाद महाद्वीप है । इसका औसत जन घनत्व 117 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है । उतरी या मध्य अमेरिका (59) अफ्रीका (39) यूरोप (32) दक्षिण अमेरिका (20) तथा ओशिनिया (3.5) जनघनत्व के घटते हुए क्रम में व्यवस्थित महाद्वीप है ।

किन्तु, महाद्वीपीय स्तर पर औसत जन घनत्व जनसंख्या के घनत्व का अत्यधिक सामान्यीकृत स्वरूप प्रस्तुत करते हैं । वस्तुत विभिन्न महाद्वीपों में ही राष्ट्रीय स्तर पर अनेक अन्तर उपस्थित होते हैं । प्रत्येक महाद्वीप में उच्च एवं निम्न घनत्व पाये जाते हैं । एशिया सबसे अधिक सघन आबाद महाद्वीप है । इसमें मकाओं (21900) तथा सिंगापुर (6687) में अत्यधिक उच्च घनत्व मिलता है । बहरीन (1038), मालदीव (963), बांग्लादेश (9 (27ताईवान (620), दक्षिण कोरिया (492) लेबनान 410)) जापान (337), भारत (324), इजराइल (305), श्रीलंका (298), फिलीपिन्स (257), वियतनाम (240), पाकिस्तान (182), उतरी कोरिया (182), चीन (129), इंडोनेशिया (108) आदि देश अधिक घने बसे है । इसके विपरीत मंगोलिया 1 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर विश्व का सबसे कम घनत्व का देश है । अन्य विरल घनत्व वाले देश क्रमशः कजाकिस्तान (5), सऊदी अरब (10) ओमान (11) तुर्कमेनिस्तान (11), भूटान (19) लाओस (23) किर्गिजस्तान (25) तथा यमन (34) है ।

तालिका : विश्व के कुछ चुने हुए देशों में जनसंख्या का घनत्व (2001)

क्षेत्र	**जनसंख्या /प्रति**	**क्षेत्र**	**जनसंख्या /प्रति**

विश्व	46	एल्साल्वेडोर	304
अफ्रीका	46	बारबेडोस	625
अल्जीरिया	31	ट्रिनीडाड	256
कांगो डेमो	23	हैटी	251
बुरूण्डी	223	दक्षिण अमेरिका	
मोरक्कों	65	ब्राजील	20
रबाण्डा	278	चिली	20
नाईजीरिया	137	अर्जेन्टीना	14
मॉरीशस	587	कोलम्बिया	37
मिश्र	70	वेनेजुएला	27
केन्या	51	पीरू	20
तंजानिया	38	एशिया	
दक्षिण अफ्रीका	35	चीन	133
सूडान	13	भारत	324
यूरोप	32	बांग्लादेश	927
बेल्जियम	337	पाकिस्तान	182
नीदरलैण्ड	393	द. कोरिया	492
डेनमार्क	124	जापान	337
यूनाईर्टड किंगडम	245	श्री लंका	298
जर्मनी	330	मलेशिया	69
इटली	192	वियतनाम	240
फ्रांस.	107	इंडोनेशिया	108
युक्रेन	81	थाईलैण्ड	122
मोनाकों	17503	टर्की	85
रूस	8	ईरान	42
उत्तरी एवं मध्य अफ्रीका		सिंगापुर	6687
कनाडा	3	ओशीनिया	3.5
संयुक्ता राज्य अमेरिका	30	आस्ट्रेलिया	02
मैक्सिकों	51	न्यूजीलैण्ड	14
प्यूर्टोरिको	440		

स्त्रोत: World Population Data Sheet, UNO,2001

यूरोप में यद्यपि महाद्वीपीय स्तर पर औसत जन घनत्व 12 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, किन्तु इसमें भी अनेक विषमताएँ दृष्टिगोचर होती है । कुछ द्वीपीय

देशों में अत्यधिक उच्च जनघनत्व मिलता है, उदाहरणार्थ, मोनाको (1753), माल्टा (1219), नाउरू (545), सान मेरिनो (450), मार्शल (389) आदि । इसके विपरीत आइसलैण्ड (3), रूसी फेडरेशन (9), नार्वे (14) फिनलैण्ड (15) तथा स्वीडन (20) में बहु त कम घनत्व पाया जाता है । नीदलैण्ड्स (393) यूरोप का सर्वाधिक सघन आबाद देश है । बेल्जियम (337), यूनाइटेड किंगडम (245), जर्मनी (230), इटली (192), डेनमार्क (124), पोलैण्ड (120) तथा फ्रांस (107) अन्य सघन आबाद देश हैं ।

अफ्रीका महाद्वीप का औसत जनघनत्व 39 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है । मॉरीशस में उच्चतम जनघनत्व (587) पाया जाता है । मुख्य स्थल पर उच्चतम जन–घनत्व रुवाण्डा (278) में मिलता है । बुरूण्डी (223), नाइजीरिया (137), मि (700), मोरक्को (65) तथा केन्या (51) अन्य हैं । अधिकांश अफ्रीकी देशों में न्यून से मध्यम जनघनत्व मिलता है! पश्चिमी सहारा (1) बोत्सवाना एवं नामीबिया (2), लीबिया एवं मॉरीटेनिया (3) गैबोन (5) चाड (7) माली एवं नाइजर (8) अंगोला (10) सोमालिया (12) जाम्बिया एवं अल्जीरिया (13) आदि विरल आबाद देश हैं ।

उतरी एवं दक्षिणी अमेरिका में सामान्यत: कम जन घनत्व मिलता है । फिर भी, कुछ देशों में, जैसे कि बारबेडोस (625), पोर्टोरिको (440), मार्टिनीक (346) एलसल्वाडोर (304), ग्रेनाडा (262), हैटी (251), आदि में उच्च जनघनत्व पाये जाते हैं । मैक्सिको में मध्यम जनघनत्व (51) संयुक्त राज्य अमेरिका में (30) तथा कनाडा में (3), में अल्प जन घनत्व पाया जाता है ।

दक्षिणी अमेरिका में 'कोलम्बिया (39) इक्केडोर (38) वेनेजुला (27) ब्राजील, पीरू एवं चिली (20) अर्जेन्टाइना (14) आदि में मध्यम जनघनत्व पाये जाते हैं ।

ओशीनिया में विश्व का अल्पतम जनघनत्व पाया जाता है । आस्ट्रेलिया (2), न्यूजोलैण्ड (14) में अल्पतम जनघनत्व मिलते हैं, जबकि फीजी द्वीप (46) अपेक्षाकृत मध्यम जनघनत्व वाला देश है ।

विश्व में जनसंख्या के घनत्व में स्थानीय वितरण प्रतिरूप के सम्बन्ध में निम्न तथ्य स्पष्टत: दृष्टिगोचर होते हैं

1 यह सामान्य धारणा है कि विश्व में जनातिरेक अमत चवचनसंजपतदद्ध है । किन्तु, वास्तविकता यह है कि विश्व के विशाल भाग विरल आबाद (sparsely population) हैं ।

2 विश्व में व्यापक क्षेत्रों में 30 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से कम जनघनत्य अमेरिका, ओशीनिया उतरी यूरोप, अधिकांश कामनवेल्थ के देश (CIS) तथा अफ्रीका के अधिकांश भाग मिलता है ।

3 ओशीनिया अमेरिका तथा अधिकांश अफ्रीका में कम जनघनत्व मिलता है ।

4 सिंगापुर (दक्षिणी पूर्वी एशिया का एक छोटा नगर – देश) विश्व का सबसे सघन आबाद देश है । पूर्व और पश्चिम को जोड़ने वाले विश्व के प्रमुख व्यापारिक मार्गो पर इसकी क्रान्तिक स्थिति इसकी उच्च जनघनत्व के लिये मुख्यत: उत्तरदायी है।

5 अत्युच्च घनत्व (120 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर) तीन क्षेत्रों में मिलता है । इनमें सबसे बड़ा क्षेत्र दक्षिणी एशिया तथा पूर्वी एशिया है, चीन, भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, जापान तथा कोरिया इसमें सम्मिलित हैं । मानव निवास का सुदीर्घ इतिहास एवं स्थायी कृषि इस भाग के उच्च जनघनत्व के लिये उत्तरदायी कारक है ।

6 अत्युच्च घनत्व का द्वितीय क्षेत्र, जो आकार में काफी छोटा है, यूरोपीय जनसमूह (agglomeration) से सम्बन्धित है । इस पेटी में छोटे आकार के किन्तु अत्युन्नत देश सम्मिलित हैं । एशियाई देशों के विपरीत यूरोपीय जनसमूह का औद्योगिक आधार है ।

7 अत्युच्च जनघनत्व की तीसरा क्षेत्र बहुत छोटा है जो उतरी अमेरिका के उतर पूर्वी भाग में स्थित है । यूरोपीय जनसमूह की भाँति यह भी औद्योगिक रुप में उन्नत तथा उच्च नगरीयकरण युक्त है ।

8 अफ्रीका में नाइजीरिया यद्यपि परम्परागत वास्य क्षेत्रों में नहीं गिना जाता है, तथापि अफ्रीका महाद्वीप में यह उच्चतम जनघनत्व मिलता हे तथा यहाँ जनघनत्व की वृद्धि की सर्वाधिक सम्भावनाएँ हैं ।

9 एशिया महाद्वीप में जनघनत्व की सर्वाधिक विषमताएँ मिलती हैं । यहाँ उच्च, मध्यम तथा न्यून घनत्व की वास्तविक विषमताएँ दृष्टिगोचर होती हैं । यहाँ चीन तथा भारत विश्व के सबसे जन संकुल देश स्थित हैं । व ही नहीं, चीन, भारत, जापान, इण्डोनेशिया आदि देशों के भीतर प्रादेशिक विषमताएँ भी मिलती है । उदाहरणार्थ भारत में गंगा–सतलज के मैदान में अत्युच्च जनघनत्व पाया जाता है, इसके विपरीत, हिमालय पर्वतीय क्षेत्र विरल आबाद है । इसी प्रकार जापान एवं चीन के तटवर्ती क्षेत्रों में उच्च जनघनत्व मिलता है, जबकि आन्तरिक पर्वतीय तथा दुर्गम क्षेत्र विरल आबाद ही हैं ।

10.2.2 **जनसंख्या वृद्धि** (Population Growth)

ईसा युग आरम्भ होने पर विश्व में 250 मिलियन जनसंख्या होने का अनुमान किया जाता है, जो 1650 ई. में दो गुनी (500 मिलियन) हो गयी । विगत 350 वर्षा में जनसंख्या में दस गुना से अधिक वृद्धि हुई हैं । निम्नांकित तालिका में 1650 से 2000 के मध्य विश्व में जनसंख्या की वृद्धि के ऑकड़े प्रदर्शित है ।

तालिका : विश्व में जनसंख्या की वृद्धि (1650–2000) (**मिलियन में**)

वर्ष	**जनसंख्या**	**वर्ष**	**जनसंख्या**
1650	550	1960	3,020

1750	720	1970	3,650
1800	930	1980	4,440
1850	1,330	1990	5,290
1900	1,660	2000	6,000
1950	2,510		

स्त्रोत - UNESCO Statistical Year Book and Estimates

उपरोक्त तालिका सें जनसंख्या की वृद्धि के विषय में निम्नलिखित तथ्य उभरते हैं–

1 विश्व की जनसंख्या 1650 के पूर्व बहुत धीमी दर से तथा इसके बाद मध्यम तीव्र (moderately rapid) दर से बढ़ी । 1650 से 2000 तक 350। वर्ष की अवधि में 5450 मिलियन जनसंख्या की वृद्धि हुई । वास्तव में 1930 से 1975 की अवधि में जनसंख्या 2000 मिलियन से दो गुनी अर्थात 4000 मिलियन हो गयी। यह वृद्धि मात्र 45 वर्षो के दौरान हुई । बीसवीं शताब्दी के उतराद्ध में जनसंख्या में चमत्कारिका (Phenomental) वृद्धि हुई ।

जनसंख्या की वृद्धि सभी महाद्वीपों में समान रूप से नहीं हुई, जैसा कि निम्न तालिका से स्पष्ट है:–

तालिका : महाद्वीपों में जनसंख्या की वृद्धि (मिलियन में)

वर्ष	एशिया	यूरोप	अफ्रीका	उतरी अमेरिका	दक्षिणी अमेरिका	ओशोनिया	सोवियत
1650	327	103	100	1	12	2	–
1750	475	144	95	1	11	1	–
1800	597	192	90	6	19	1	–
1850	741	274	95	26	33	1	–
1900	915	423	120	81	63	6	–
1950	1,377	392	222	166	166	13	180
1960	1,668	425	279	218	199	16	214
1970	2,102	460	362	286	226	19	243
1980	2,583	484	477	363	252	23	266
1990	3,112	686	642	448	296	26	289
2001	3,720	727	818	454	350	31	144

स्त्रोत–UNESCO Statistical Year book, World Population Data Sheet 2001

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से निम्नलिखित तथ्य उभरते हैं:–

1 1650–1750 के मध्य, एशिया तथा यूरोप में जनसंख्या की मध्यम वृद्धि हुई, जबकि अफ्रीका के जनसंख्या घटी तथा अमेरिका में मामूली वृद्धि हुई।

2 1750–1900 के मध्य सभी महाद्वीपों में जनसंख्या की वृद्धि हुई, विशेषत: एशिया, यूरोप एवं उतरी अमेरिका में ।

3 बीसवीं शताब्दी में उतरी अमेरिका एवं एशिया में जनसंख्या तेजी से बढ़ी । किन्तु यूरोप में जनसंख्या वृद्धि धीमी दर से हुई।

4 सम्पूर्ण विश्व में 1650 से 2000 तक नौगुनी वृद्धि हुई है । किन्तु उतरी अमेरिका में 450 गुना से अधिक, दक्षिणी अमेरिका में 30 गुनी, एशिया में 11 गुनी, अफ्रीका, दक्षिणी अमेरिका में 30 गुनी, एशिया में 11 गुनी, अफ्रीका में 8 गुनी तथा यूरोप में लगभग 7 गुनी वृद्धि हुई।

जनसंख्या वृद्धि के कारण (Causes of rapid increase in Population,)

बीसवीं शताब्दी में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि के निम्नलिखित कारण रहें:–

1 सघन तथा यान्त्रिक कृषि से भोजन उत्पादन में अपार वृद्धि हुई जिससे भोजन की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता सुनिश्चित हुई।

2 खनिज एवं ऊर्जा संसाधनों तथा कच्चे मालों के व्यापक प्रयोग तथा कुशल प्रबन्ध के कारण विनिर्माणी उद्योगों तथा व्यापार का विकास हुआ। इस सब परिवर्तनों के कारण रोजगार के नये अवसर उत्पन्न हुए जिसने जनसंख्या की तीव्र वृद्धि को प्रेरित किया ।

3 वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकासों के कारण नयी खोजों ने मानव जीवन को सुविधाजनक बना दिया ।

4 चिकित्सा तथा स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के कारण घातक बीमारियों पर नियन्त्रण सम्भव हुआ जिससे मृत्यु दरों में कमी आयी ।

5 अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैण्ड में अप्रवास (Immigration) के कारण इन प्रदेशों में जनसंख्या की वृद्धि हुई।

विश्व के विभिन्न भागों में जनसंख्या की वृद्धि दरें भिन्न रही हैं । विश्व को सामान्यत: विकसित विश्व (Developed world) तथा विकाशील विश्व (Developing world) वर्गो में बाँटा जा सकता है । उतरी अमेरिका, यूरोप, आस्ट्रेलिया तथा जापान प्रथम वर्ग में आते हैं, जबकि अफ्रीका, एशिया तथा लेटिन अमेरिका द्वितीय वर्ग में आते है । यह एक रोचक विषय है कि 1950 तक विकसित विश्व में जनसंख्या की वृद्धि दर विकासशील देशों में 0.6 प्रतिशत की दर से जनसंख्या की . वार्षिक वृद्धि हुई तथा 1850–1950 के दौरान 0.9 प्रतिशत की दर से । इन आँकडो की तुलना में विकासशील देशों की जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर क्रमश: 0.4 तथा 0.6 प्रतिशत रही ।

1950 से दोनों विश्वों (विकसित एवं विकासशील) की जनसंख्या वृद्धि दरों में भारी परिवर्तन हुए हैं । 1950–70 के दौरान विकसित देशों की जनसंख्या में 11

प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि हुई जबकि विकाशील देशों की जनसंख्या में 22 प्रतिशत की दर से वार्षिक वृद्धि हुई । विगत तीन दशको में विश्व की जनसंख्या में कुल वृद्धि बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में कुल जनसंख्या से भी अधिक हुई । इस वृद्धि का लगभग 80 प्रतिशत विकासशील देशों में हुआ । इस विस्फोटक वृद्धि का प्रमुख कारण इन देशों में मृत्यु दरों का ह्रास तथा एक विशाल जनसंख्या आधार का होना था । द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विकासशील देशों की मृत्यु दरों में तेजी से गिरावट आयी जिनके प्रमुख कारण चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार प्राविधिक का विकास तथा भोजन उत्पादन में वृद्धि थे ।

महाद्वीपीय स्तर पर उच्चतम वृद्धि दर (3 प्रतिशत वार्षिक) अफ्रीका में दर्ज की गयी । दक्षिणी अमेरिका में वृद्धि दर 1.9 प्रतिशत, एशिया में 1.8 प्रतिशत, ओशीनिया में 1.4 प्रतिशत, उतरी अमेरिका में 0.7 प्रतिशत तथा यूरोप में 0.2 प्रतिशत रही । इस प्रकार जनसंख्या 'वृद्धि के तीन प्रतिरूप दृष्टिगोचर होते है–

(1) तीव्र वृद्धि – जैसे कि भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा अफ्रीका देशों में ।

(2) मध्यम वृद्धि – जैसे कि जापान में ।

(3) धीमी वृद्धि – जैसे कि फ्रांस तथा यूनाइटेड किंगडम में'।

वस्तुत: फ्रांस जैसे कुछ देशों में जनसंख्या की नकारात्मक वृद्धि (कमी) हुई । यूरोप के अनेक देशों में यह प्रवृति देखने को मिलती है ।

जन्म एवं मृत्यु दरें (Birth and Death rates)

किसी देश की जनसंख्या की वृद्धि मुख्यत: उसकी जन्म दर एवं मृत्यु–दर पर निर्भर करती है । इन आँकडों को जीवनीय आकड़े कहते हैं । इन दोनों का। अन्तर होने के कारण जनसंख्या की . प्राकृतिक वृद्धि होती है ।

जन्म दरों को तीन वर्गो में रखा जाता है–

(1) उच्च जन्म दर – 35 प्रति हजार व्यक्ति से अधिक ।

(2) मध्यम जन्म दर - 25–35 प्रति हजार व्यक्ति ।

(3) निम्न जन्म दर – 25 प्रति हजार व्यक्ति से कम ।

2001 में विश्व की औसत जन्म दर 22 प्रति हजार व्यक्ति थी । महाद्वीपीय स्तर पर अफ्रीका की जन्म दर सर्वोच्च (38 प्रति हजार व्यक्ति) रही । मध्य अफ्रीका (48) पश्चिमी एवं पूर्वी अफ्रीका (42) उतरी अफ्रीका (28) तथा दक्षिणी अफ्रीका (27) में निम्न प्रादेशिक जन्म दरें दर्ज की गयी । राष्ट्रीय स्तर पर नाइजर (53) माली एवं अंगोला (50) लाइबीरिया एवं चाड (49) एवं सोमालिया एवं युगाण्डा (48) में जन्म दरें दर्ज की गयी ।

10.2.3 **शहरी जनसंख्या** (Urban Population)

जनसंख्या अध्ययन के विविध स्वरूपों में शहरी जनसंख्या. का अध्ययन भी राजनीतिक भूगोल में महत्वपूर्ण स्थान रखता है । क्योंकि वर्तमान में शहर आर्थिक एवं

सामाजिक गतिविधियों के केन्द्र होने के साथ–साथ राजनीतिक गतिविधियों के भी केन्द्र हैं । औद्योगिक क्रान्ति के बाद शहरों का विकास अत्यधिक हुआ है ।

विश्व में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि होती जा रही है । 1950 में विश्व की केवल 29 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती थी, 2001 में यह प्रतिशत बढ़कर 46 पहुँच गया है । अधिक विकसित देशों में यह प्रतिशत 75 है, जबकि कम विकसित देशों में मात्र 43 है । हाल ही में तीव्र नगरीय कारण के दो प्रमुख कारण रहें हैं– (1) कम विकसित देशों में प्राकृतिक वृद्धि की उच्च दर, तथा (2) गाँवों से नगरों की ओर स्थानान्तरण ।

विभिन्न महाद्वीपों में दक्षिणी अमेरिका सर्वाधिक नगरीयकृत (urbanisid) महर्षि है । इसकी 79 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है । घटते हुए क्रम में नगरीय कृत महाद्वीप–उतरी अमेरिका (15%), यूरोप (73%), ओशीनिया (69%), एशिया (37) एवं अफ्रीका (33) हैं । एशियाई तथा अफ्रीकी देशों में दीर्घ काल तक उपनिवेशवाद प्रचलित रहा हैं जो इनकी कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था तथा निम्न नगरीयकरण के लिये उत्तरदायी रहा है । इसके विपरीत कुछ एशियाई देश, जैसे कि सिंगापुर (100%), कुवैत (100%), इजराइल (91%), सर्वाधिक नगरीयकृत देश हैं । संयुक्त अरब अमीरात (84%), जापान (78%), तथा जोर्डन (81%), में भी उच्च नगरीयकरण मिलता है । किन्तु एशिया के दो जन संकुल दो चीन (36%) तथा भारत (28%), में अब भी निम्न नगरीयकरण मिलता है । नेपाल (11%) तथा भूटान (15%) में एशिया की सबसे कम नगरीय जनसंख्या मिलती है ।

अफ्रीका में रूवाण्डा (5%), तथा बुरूण्डी (8%) विश्व के सबसे कम नगरीयकृत देश हैं । इसके विपरीत पश्चिमी सहारा (9%). लीबिया (86%) तथा जिबूती (83%) में उच्च नगरीयकरण मिलता है ।

यूरोप में बेल्जियम (97%), आइसलैण्ड एवं एन्डोरा (93%), इटली एवं यूनाइटेड किंगडम (90%), लक्जमबर्ग (88%), जर्मनी (86) तथा स्विटजरलैण्ड (84%) में उचच नगरीयकरण है । यूरोप में नगरीयकरण औद्योगिक क्रान्ति की देन है ।
दक्षिणी अमेरिका में अर्जेन्टाइना (90%), वेनेजुला तथा युरूग्वे (87%), चिली (86%) एव ब्राजील (81%) में उच्च नगरीयकरण मिलता है । इसका प्रमुख कारण यह है कि इन देशों की अधिकांश आबादी तटवर्ती क्षेत्रों में स्थित नगरों में संकेन्द्रित है ।
इस शहरीकरण के राजनीतिक प्रभाव की दृष्टि से दो तथ्य महत्वपूर्ण है– :–

प्रथम – हवाई युद्ध तथा आधुनिक अस्त्रों के प्रयोग के कारण शहर आक्रमण से अत्यधिक . भेद्य हो गए हैं । आज विश्व को कोई भी शहर आधुनिक आयुधों की सीमा से बाहर नहीं है ।

द्वितीय – शहरों में अत्यधिक जनसंख्या जमाव से अनेक समस्याएँ जैसे– आवासीय स्थान, प्रदूषण, पेयजल, परिवहन आदि होती हैं । साथ ही जनसंख्या का

शहरों की ओर निरन्तर प्रवाह होता रहता है । इसी कारण शहर राजनीतिक जाग्रति एवं राजनीतिक गतिविधियों के केन्द्र हो जाते हैं । अत: इनको राज्य के लिए नर्व सेन्टर' (Nerve Centres Centres) की संज्ञा दी जाती है ।

शहरों का प्रशासकीय महत्व भी अधिक होता है । शहर ही देश अथवा प्रान्त की राजधानी बनाए जाते हैं । राजधानी राज्य के जीवन में प्राण के समान है । जिसका पतन राज्य का पतन माना जाता है ।

10 .2 .4 **जनाधिक्य की समस्या** (Problem of Overpopulation)

जब किसी क्षेत्र की जनसंख्या उस क्षेत्र की धारण क्षमता से अधिक होती है तब वह क्षेत्र जनाधिक्य कहलाता है । ऐसा प्राय: तब होता है जब उस क्षेत्र में संसाधनों का विकास जनसंख्या की वृद्धि के अनुरूप नहीं होता है । जनाधिक्य राष्ट्रीय या प्रादेशिक स्तर पर हो सकता है । प्रादेशिक स्तर पर जनाधिक्य ग्रामीण या नगरीय किसी भी क्षेत्र में हो सकता है । ग्रामीण क्षेत्र में जनाधिक्य के निम्नलिखित कारण है–

1 ग्रामीण जनसंख्या में तीव्र प्राकृतिक वृद्धि,

2 कृषि योग्य भूमि का विषम वितरण,

3 कृषि का यंत्रीकरण,

4 ग्रामीण क्षेत्र में गैर कृषि क्षेत्र का सीमित विकास,

5 कृषि उत्पादकता का निम्न स्तर,

6 ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक विकास का निम्न स्तर, एवं

7 कृषि क्षेत्र में लचीलापन न होना ।

तीसरे विश्व के देश ग्रामीण जनाधिक्य की समस्या से ग्रसित रहते है।

नगरीय क्षेत्रों में औद्योगिक जनातिरेक पाया जाता है । इसके दो कारण हैं–

1 तकनीकी विकास होने पर उस क्षेत्र का श्रम या इसके पदार्थ व्यर्थ हो जाते हैं, तथा

2 किसी उद्योग या इसके उत्पाद का हास ।

बोध प्रश्न–।

1. एशिया महाद्वीप में विश्व की' जनसंख्या का कितना प्रतिशत पाया जाता है?
2. उतरी अमेरिका महाद्वीप में विश्व जनसंख्या का प्रतिशत क्या है?
3. सन् 2001 की जनगणना के अनुसार विश्व का औसत जनसंख्या घनत्व क्या है?
4. महाद्वीपीय स्तर पर उच्चतम जनसंख्या वृद्धि दर किस महाद्वीप की है?
5. सन् 2001 की जनगणना के अनुसार विश्व की शहरी जनसंख्या का प्रतिशत क्या है?

10.3 भाषा (Language)

भाषा के माध्यम से विचार अभिव्यक्ति संभव हो पाती है । भाषा के द्वारा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सहायता मिलती है । अत: यह राष्ट्रों में एकता अथवा विविधता का प्रमुख कारण होती है । समान भाषा क्षेत्रीय एकता को निर्मित करती है तो दूसरी ओर अनेक भाषाएँ राष्ट्रीय विखण्डता को पनपाने में मददगार होती है । प्रत्येक भाषा बोलने वाले अपनी भाषा की प्रगति चाहते है एवं उसके विकास के लिए सदैव प्रगतिशील रहते हैं । यही कारण है कि यदि एक राज्य में अनेक भाषाएँ होती हैं तो उनका समन्वय अत्यन्त कठिन होता है तथा वहाँ भाषा के आधार पर अनेक विवाद उत्पन्न हो जाते हैं जो अन्ततोगत्वा राजनीतिक जटिलताओं को जन्म देते हैं । इसलिए राजनीतिक भूगोल के सांस्कृतिक तत्वों में भाषा. का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है ।

विश्व का भाषा प्रारूप अत्यधिक जटिल है । भाषाओं के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व को समझने के लिए विश्व की भाषाओं का संक्षिप्त वर्णन आवश्यक है–

एशिया की भाषाएँ – एशिया महाद्वीप में भाषाओं की विविधता एवं जटिलता अत्यधिक पाई जाती है । उदाहरण के लिए भारत तथा पाकिस्तान में 222 भिन्न–भिन्न प्रकार की भाषाएँ है, इसके अतिरिक्त अनेक बोलियां हैं । इसी कारण स्वतंत्र भारत के सामने भाषा की समस्या प्रमुख थी, जिसे पूर्ण रूप; से आज तक भी नहीं सुलझाया जा सका है । यद्यपि हिन्दी को राष्ट्र भाषा माना गया है, किन्तु इससे सम्बन्धित विवाद आज भी उठते है । इण्डोनेशिया में भी इसी प्रकार की भाषाई विविधता है । मलाया में 'लिन्गुआ–फ्रांका'– (Lingua–Franca) को सामान्य भाषा माना –गया है । फिलीपाइन्स में लगभग 64 स्थानीय भाषाएँ तथा बोलियाँ प्रचलित है, यद्यपि 'इंगलिश' सरकारी भाषा में रूप में प्रयुक्त की जाती है । चीनी भाषा लिखित रूप में समान है किन्तु बोलने में प्रत्येक प्रदेश में भिन्नता है ।

अमेरिका की भाषाएँ – सम्पूर्ण अमेरिका में सामान्यतया तीन भाषाएँ मिलती हैं । उतरी भाग में अंग्रेजी, दक्षिण में स्पेनिश एवं पुर्तगीज हैं । संयुक्त राज्य–मेक्सिको की सीमा इनके मध्य विभाजक स्वरूप है । ये तीनों भाषाएँ यहाँ आने वाले विदेशियों की थीं । इसके कुछ अपवाद भी हैं, जैसे ब्राजील, चिली में जर्मन, अर्जेन्टाइना में इटालियन तथा ब्रिटिश व फ्रेन्च गाइना में क्रमश: तीनों भाषाएँ बोली जाती हैं । अत: अमेरिका में भाषाई प्रारूप साधारण होने के कारण यहाँ के) देशों को अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो में सुविधा रही है ।

यूरोप की भाषाएँ – सम्पूर्ण यूरोप की भाषाओं को तीन भाषा समूहों में विभक्त किया सकता है –

प्रथम – जर्मनिक (Germanic) में अंग्रेजी, जर्मन, नार्वेनियम एवं स्विडिश,

द्वितीय – रोमनिक (Romanic) में फ्रेन्च, इटालियन, कास्टीलियन पुर्तगीज, एवं तृतीय – साल्विक (Salvic) में पोलिश, युक्रेनियन बेलोरशियन और रशियन सम्मिलित की जाती है ।

जर्मनिक भाषाएँ उत्तरी–पश्चिमी एवं मध्य यूरोप में, रोमनिक दक्षिणी–पश्चिमी एवं दक्षिणी मध्य यूरोप में तथा साल्विक पूर्वी यूरोप में. प्रचलित है ।

इस प्रकार यूरोप में विविध भाषा प्रारूप पाए जाते हैं । यहाँ अनेक देशों में भाषा की जटिलता है । स्विटजरलैण्ड में चार राजकीय भाषाएँ (जर्मनी, फ्रेन्च, इटालियन और ग्रीको–रोमन) हैं । इसी प्रकार बेल्जियम में फ्लेनिश वालोन (फ्रेन्च) तथा जर्मन भाषा है ।

अफ्रीका एवं आस्ट्रेलिया की भाषाएँ

अफ्रीका महाद्वीप में अधिकांशत: एक से अधिक 'भाषाएँ प्रचलित हैं । एक शासक देश की, दूसरी स्थानीय । स्थानीय लोगों द्वारा स्थानीय भाषा बोली जाती है । केवल दक्षिणी अफ्रीका में 'बोर' जो अफ्रीकन भाषा बोलते हैं, वह इंगलिश का मिश्रण है। यहाँ दोनों भाषाओं को राजकीय भाषा माना गया है ।

आस्ट्रेलिया में भाषाई विविधता नगण्य है । यहाँ की अधिकांश जनसंख्या ब्रिटिश है, अत: राजकीय भाषा 'इंगलिश' है ।

अल्पसंख्यक भाषा (Minorities Language)

किसी क्षेत्र में बोली जाने वाली इस प्रकार की हो सकती है जिसको वहाँ के बहु त कम लोग बोलते हैं । इस प्रकार की भाषा को 'अल्पसंख्यक भाषा' कहते हैं । ऐसी भाषा बोलने वालों को 'भाषायी अल्पसंख्यक' के नाम से जाना जाता है । प्रत्येक भाषा के लोग अपनी भाषा की सुरक्षा चाहते हैं । अत: अल्पसंख्यक भाषा राज्य की राजनीतिक एकता को प्रभावित करती है । भाषायी अल्पसंख्यकों का स्वरूप राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों ही प्रकार का हो सकता है । राष्ट्रीय अल्पसंख्यक राष्ट्र के प्रति दफादार होते हैं । इसकी कारण सरकार उनके प्रति कठोर व्यवहार नहीं रखती क्योंकि उनके राष्ट्रीय होने का भय रहता है । दूसरी ओर अराष्ट्रीय अल्पसंख्यक क्षेत्रों में अनेक बार भाषा के लिए संघर्ष भी हो जाता है । सरकार का दृष्टिकोण इनके प्रति कठोर होता है ।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विश्व में अनेक भाषाएँ बोली जाती है । विश्व में अनेक भाषाओं का होना स्वाभाविक है किन्तु भाषाओं की विविधता से राजनीतिक एवं सांस्कृतिक गतिरोध उत्पन्न होता है । भाषा राष्ट्र में एकता एवं पृथकता दोनों तत्वों का कारण होती है । एक देश को एकता के सूत्र में बांधने में भाषा का महत्वपूर्ण योग होता है । इससे भावनात्मक एकता का जन्म होता है । दूसरी और भाषा की पृथकता विघटन को प्रोस्साहन देती है और अराजकता का कारण होती है ।

अत: अन्त में यह कहा जा सकता है कि भाषा एक प्रमुख सांस्कृतिक तत्व है जो राज्य के राजनीतिक स्वरूप एवं उसकी एकता को प्रभावित करता है ।

बोध प्रश्न–2

1. भारत तथा पाकिस्तान में भिन्न–भिन्न प्रकार की कितनी भाषाएँ हैं?.
2. लिन्गुआ–फ्रांका कहीं की सामान्य भाषा है?
3. सम्पूर्ण अमेरिका में कितनी भाषाएँ मिलती हैं एवं उनके नाम बताइए?',
4. आस्ट्रेलिया की राजकीय भाषा कौनसी है
5. 'बोर' भाषा कही बोली जाती है?

10.4 धर्म (Religion)

धर्म एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक –तत्व है । प्राचीन काल से समाज मैं धर्म का महत्व रहा है । प्राचीन समय में अनेक युद्धों का कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धर्म रहा' है । भावनात्मकता होने के कारण धार्मिक युद्धों में कट्टरता पाई जाती थी । यद्यपि वर्तमान वैज्ञानिक युग में सैद्धान्तिक रूप से धर्म का महत्व न रहा हो किन्तु आज भी राज्य के प्रशासन एवं अन्तराष्ट्रीय सम्बन्धों पर धर्म का प्रभाव है । उदाहरण के लिए भारत–पाकिस्तान तथा अरब–इजराइल संघर्ष है, जिसके लिए अन्य कारणों के अतिरिक्त धर्म भी उत्तरदायी है ।

राजनीतिक भूगोल में धर्म के महत्व के दो कारण हैं:

प्रथम – धार्मिक असहिष्णुता एवं जटिलता का प्रभाव राष्ट्र की शक्ति पर पड़ता है, एवं

द्वितीय – धार्मिक संगठन राजनीतिक गतिविधियों को प्रभावित करते हैं ।

यद्यपि धार्मिक प्रभाव दिनों–दिन कम होता जा रहा है ।

आज विश्व, में अनेक धर्म प्रचलित है । प्रमुख धर्मो में इसाई, इस्लाम, हिन्दू बौद्ध, कन्फ्यूशिज्म, यहूदी आदि हैं) विश्व के प्रमुख धर्मावलम्बियों की अनुमानित संख्या निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है–

तालिका : विश्व के प्रमुख धर्मावलम्बियों की अनुमानित संख्या

क्र.स.	**मुख्य धर्म**	**धर्मावलम्बियों की संख्या (दस लाख)**	**विश्व जनसंख्या का प्रतिशत**
1.	इसाई	1833	33.5
2.	(1) रोमन कैथोलिक	1025	18.8
3.	(2) प्रोटेस्टेन्ट	373	6.8
4.	(3) आर्थोडाक्स	170	3.1
5.	(4) एक्लिकन्स	74	1.4
	(5) अन्य	188	3.4
2.	इस्लाम	971	17.7
3.	हिन्दू	732	16.0
4.	बौद्ध	314	5.7

5.	कन्फ्यूशिज्म	370	6.2
6.	यहूदी	17.8	0.3

प्रमुख धर्मो के वितरण की दृष्टि से यूरोप, अमेरिका, दक्षिणी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा फिलीपाइन्स में इसाई धर्म है । इस्लाम का विस्तार अफ्रीका के उतरी–पश्चिमी तट से पश्चिमी एशिया एवं इण्डोनेशिया तक है । अफ्रीका के पूर्वी तट के सहारे भी इसका विस्तार है । हिन्दू धर्म भारत में, बौद्ध धर्म पूर्वी तथा दक्षिणी–पूर्वी एशिया में पाया जाता है । कन्फ्यूशिज्म, टाओ और शिन्टो धर्म बौद्ध धर्म से समानता रखता है तथा लगभग उन्हीं क्षेत्रों में विस्तृत है । इन धर्मो के प्रत्येक के उपभेद भी हैं।

धर्म की एकरूपता राज्य को शक्तिशाली बनाती है, जबकि धार्मिक भिन्नता राज्य को निर्बल बनाती है । धार्मिक एकरूपता के उदाहरणस्वरूप हम फ्रान्स, स्पेन, बेल्जियम आस्ट्रिया आदि को ले सकते हैं । इसी प्रकार अरब देशों में शिया, सुन्नी के मतभेद के अतिरिक्त समानता है । संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा में रोमन केथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट दोनों हैं तथा उनमें संघर्ष होता रहता है ।

प्राचीन काल से ही धर्म ने राजनीति को अत्यधिक प्रभावित किया है । धर्म युद्ध या धर्म प्रसार हेतु विस्तार की नीति के कई उदाहरण इतिहास में मिलते हैं । वर्तमान समय में भी धार्मिक गतिविधियाँ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति को प्रभावित करती। है ।

बोध प्रशन - 3

1. विश्व में प्रचलित दो धर्मो के क्या नाम है ?
2. इसाई धर्म को मानने वालों का विश्व में क्या प्रतिशत है ?
3. हिन्दू धर्मावलम्बियों की संख्या विश्व में क्या है ?
4. शिया ,सुन्नी किस धर्म से सम्बन्धित है ?
5. धार्मिक एकरुपता राज्य को सबल बनाती है या निर्बल ?

10.5 सारांश (Summary)

सांस्कृतिक तत्व भी किसी प्रदेश के राजनीतिक स्वरूप को प्रभावित करते हैं । सांस्कृतिक तत्वों में मुख्यत: जनसंख्या, भाषा धर्म आदि को सम्मिलित किया जाता है। जनसंख्या राज्य के मूल तत्वों में प्रमुख है । जनसंख्या राज्य की प्रमुख राष्ट्रीय शक्ति होती है जो किसी राज्य की उत्पादन क्षमता एवं वहाँ की राजनीतिक घटनाओं को नियंत्रित करती है । विश्व में जनसंख्या का वितरण अत्यधिक असमान है । जनसंख्या का वितरण जलवायु के तत्वों द्वारा अत्यधिक नियंत्रित एवं निर्धारित होता है । मानसूनी एवं शीतोष्ण जलवायु वाले प्रदेशों में विश्व की अधिकांश जनसंख्या पाई जाती है । विश्व के सबसे अधिक घने बसे महाद्वीप एशिया व यूरोप हैं तथा कम जनसंख्या वाले महाद्वीप दक्षिणी महाद्वीप हैं । एशिया सबसे अधिक सघन आबाद महाद्वीप है ।

इसमें (21900) तथा सिंगापुर (6687) में. अत्यधिक उच्च जनसंख्या घनत्व मिलता है। इसके विपरीत मंगोलिया) 1 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.) विश्व का सबसे कम जनसंख्या घनत्व का देश है । सम्पूर्ण विश्व में 1650 ई. से – 2000 ई. तक नौगुनी वृद्धि हुई है । विश्व के महाद्वीपों में दक्षिणी अमेरिका सर्वाधिक नगरीकृत महाद्वीप है (79%) । यूरोप में नगरीकरण औद्योगिक क्रान्ति की देन है । जब संसाधनों का विकास जनसंख्या की वृद्धि के 'अनुरूप नहीं होता है तो जनाधिक्य की समस्या उत्पन्न हो जाती है । भाषा के माध्यम से विचार अभिव्यक्ति संभव हो पाती है । यह राष्ट्रों में एकता अथवा विविधता का कारण होती है । भारत तथा पाकिस्तान में 222 भिन्न–भिन्न प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं । मलाया में 'लिन्गुआ–फ्रांका' को सामान्य भाषा माना गया है । सम्पूर्ण अमेरिका में सामान्यतया तीन भाषाएँ मिलती हैं । उतरी भाग में अंग्रेजी, दक्षिण में स्पेनिश एवं पुर्तगीज हैं । किसी क्षेत्र में बहुत कम लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा को 'अल्पसंख्यक भाषा' कहते हैं ।

प्राचीन काल से समाज में धर्म का महत्व रहा है । विश्व में प्रचलित प्रमुख धर्मो में इसाई इस्लाम, हिन्दू बौद्ध, कन्फ्यूशिल्म, यहूदी आदि हैं । यूरोप, अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा फिलीपाइन्स में इसाई धर्म, अफ्रीका के उतरी–पश्चिमी। तट से पश्चिमी एशिया एवं इण्डोनेशिया तक इस्लाम धर्म, भारत में हिन्दू धर्म, पूर्वी एवं दक्षिणी–पूर्वी एशिया में बौद्ध धर्म पाया जाता है । धर्म की एकरूपता राज्य को शक्तिशाली बनाती है जबकि धार्मिक भिन्नता राज्य को निर्बल बनाती है ।

10.6 शब्दावली (GlossaryGlossary)

जनसंख्या (Population)	: किसी क्षेत्र में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या ।
जनसंख्या घनत्व (Population Density)	: इकाई क्षेत्र में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या ।
शहरी जनसंख्या (Urban Population)	: किसी क्षेत्र में शहरी क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या ।
जनाधिक्य. (Over Population)	: किसी क्षेत्र की जनसंख्या उस क्षेत्र की धारण क्षमता से अधिक होती है उसे जनाधिक्य कहते है ।
भाषा (Language)	: विचारों की अभिव्यक्ति का साधन है ।
अल्पसंख्यक भाषा (Minorities Language)	: किसी क्षेत्र के बहुत कम लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा ।

10.7 सन्दर्भ ग्रन्थ (References)

1.	Dikshit ,R.D	:	Political Geography ,McGraw Hill ,2000.
2.	Pounds ,N.J.G	:	: Political Geography ,McGraw Hill 1963
3.	Valkenbarg ,S,V. & Stoz ,C.L.	:	Elements of Political Geography,Prentice Hall of India ,New Delhi,1963
4.	Weigert,W.H & Other	:	Principal of Political Geography Appleton of Political Geography
5.	गौतम, अलका	:	आर्थिक भूगोल के मूल तत्व, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2009
6.	सक्सेना, एच.एम	:	राजनीतिक भूगोल. रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, 2008.

10.8 बोध प्रश्नों के उतर

बोध प्रश्न–।

1 60.6प्रतिशत

2 8.5प्रतिशत

3 45.3व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.

4 अफ्रीका की (3%)

5 प्रतिशत

बोध प्रश्न–2

1 222

2 मलाया

3 तीन भाषाएँ, अंग्रेजी, स्पेनिश एवं पुर्तगीज

4 इंगलिश

5 दक्षिणी अफ्रीका

बोध प्रश्न–3

1 इसाई, हिन्दू

2 33.5प्रतिशत

3 732मिलियन

4 इस्लाम धर्म से

5 सबल बनाती है ।

10.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1 राजनीतिक भूगोल में सांस्कृतिक तत्वों का महत्व स्पष्ट कीजिए ।

2 जनसंख्या वितरण एवं घनत्व पर एक निबन्ध लिखिए ।

3 विश्व के भाषा प्रारूप को स्पष्ट करते हुए उसके राजनीतिक महत्व की विवेचना कीजिए ।

4 धर्म राजनीतिक गतिविधियों को किस प्रकार प्रभावित करता है? विश्व के धार्मिक प्रारूप को स्पष्ट कीजिए ।